७. सपनों से सत्य की ओर

– आनंद बनसोडे

पूरक पठन

आनंद बनसोडे जी ने अपने बचपन की असफलता के दौर में संसार के सबसे ऊँचे शिखर मांउट एवरेस्ट पर जाने का स्वप्न देखा । 'कठिन से कठिन समय में संकटों पर मात करने वाला इनसान ही जीवन में इतिहास रच पाता है । एक स्वप्न और उसपर रखी हुई असीम श्रद्धा मनुष्य को कई चमत्कारिक तथा आश्चर्यजनक बातें दिखाती है' यही आनंद बनसोडे ने अपने भाषण में बताई है । ''ध्यास हिमशिखरों का-सपनों से सत्य की ओर'' किताब में आनंद ने अपने जीवन की कहानी बताई है । अपने सपनों के दौर में उन्हें अमेरिका, इग्लैंड, जर्मनी, रुस, ऑस्ट्रेलिया और उसके बाद पाँच महाद्वीपों की यात्रा करने का अवसर मिला और अंततः संसार के सबसे ऊँचे शिखर माउंट एवरेस्ट पर पहुँचकर के श्री के सामने नतमस्तक होने का सौभाग्य मिला। उन्होंने स्कूल और कॉलेज के बच्चों को प्रेरित करने का आंदोलन शुरू किया है । 'सपनों पर अपार निष्ठा तथा प्रेम संसार के किसी भी मनुष्य को अपने सपने साकार करने से रोक नहीं सकता' यही बात आनंद अपने भाषण में बताते हैं । जगह-जगह जाकर बनसोड़े जी युवकों को मुसीबतों से घबराकर पीछे न हटने की प्रेरणा देते हैं । वे आज नवयुवकों के लिए प्रेरणास्रोत बन गए हैं । उनके भाषण के कुछ अंश प्रस्तुत पाठ में संकलित हैं ।

माँ ने मुझे बचपन में कहा था, ''जिंदगी में भले ही सफलता ना मिले किंतु अच्छा इनसान बनने की हर कोशिश करते रहना.... मुझे तुम पर नाज होगा कि तुमने संसार का सबसे मुश्किल काम किया है ।'' मैं बचपन से सपने देखने वाला लेकिन शरीर से कमजोर और पढ़ाई में भी बिलकुल निकम्मा था । हरदम अकेला रहना पसंद करता था । मेरा जन्म एक अँधेरी झोंपड़ी में हुआ । मेरा बचपन अभावों से भरा था । आज के बच्चों की तरह कई-कई कपड़े, घूमने-फिरने के साधन, खेलने के खिलौने, टी.वी, फोन आदि के बारे में तो हम सोच भी नहीं सकते थे । पूरे परिवार का जीवन कष्टमय था । साइकिल तथा गाड़ी के पहियों की पंक्चर निकालकर मेरे पिता जी अशोक बनसोडे अपनी तीन बेटियों तथा मेरी परवरिश करते थे । पढ़ाई में कमजोर होने के कारण मुझे हर जगह अपमान का सामना करना पड़ता था । इसलिए मेरा एकमात्र शौक था सपने देखना एकांत में सोचता था कि ''मैं संसार के सबसे ऊँचे शिखर पर पहुँच जाऊँ जहाँ मेरा अपमान करने कोई न आए।'' आज के युवक थोड़े से अपमान से हार जाते हैं लेकिन दुनिया का इतिहास यह बताता है कि आजतक दुनिया के बड़े व्यक्तियों ने अपमान सहकर खुद

परिचय

जन्म : २९ जुलाई १९८५, सोलापुर (महाराष्ट्र)

परिचय : आनंद बनसोडे जी ने माउंट एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करके विश्व के चार महाद्वीपों के चार सर्वोच्च शिखरों को फतह कर विश्व में एक कीर्तिमान स्थापित किया है । आपने अनुभवों पर आधारित भाषणों द्वारा लोगों को प्रेरित करने का काम किया है ।

प्रमुख कृतियाँ : ध्यास उत्तुंग, हिमशिखरांचा, स्टेपिंग स्टोन टू सक्सेस, स्वप्नातून सत्याकडे, स्वप्नपूर्तिचा खजिना, नालंदा आदि ।

गद्य संबंधी

भाषण : समाज को प्रेरित करने के लिए समूह के सामने मौखिक मुखर अभिव्यक्ति को भाषण कहा जाता है ।

प्रस्तुत भाषण में बनसोडे जी ने अपने अनुभवों के आधार पर युवकों को मुसीबतों से हार न मानने तथा जीवन में सदैव संघर्ष के लिए तत्पर रहने हेतु प्रेरित किया है ।

मुकाम हासिल किया है ।

पढ़ाई में बहुत ही कमजोर होने के कारण मैं नौवीं कक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया । कुछ समय पढ़ाई छोड़कर मैंने अपने पिता जी के साथ काम पर जाना शुरू किया परंतु माँ की प्रेरणा से मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सका । मेरी माँ पार्वती ने बचपन से ही बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित किया इसलिए मैं दसवीं कक्षा में स्कूल में दूसरे नंबर से उत्तीर्ण हो गया ।

आप के बीच ऐसे कई बच्चे होंगे जो पढ़ाई में कमजोर होने के कारण अपने आप को कमतर समझते हैं । उनको यही लगता होगा कि अब सब कुछ खत्म हो चुका । लेकिन मैं उनको यह बताना चाहता हूँ कि 'आप क्या हैं और कहाँ से आए हो ये बात महत्त्वपूर्ण नहीं है । आपको कहाँ जाना है यह अगर आपको पता होगा तो दुनिया की कोई भी ताकत आपको रोक नहीं सकती । आप अभी क्या हो इसके अलावा जीवन में क्या करना है इस बात पर आपको ध्यान देना है ।''

बारहवीं साइंस उत्तीर्ण होने के बाद मैंने बी. एससी. के लिए प्रवेश ले लिया । अब मुझे बचपन से देखा हुआ 'दुनिया की सबसे ऊँची चोटी पर चढ़ने' का सपना पूरा करना था । सोलापुर जैसे सतही प्रदेश में जहाँ गिर्यारोहण का नाम तक नहीं लिया जाता, ऐसे स्थान पर रहकर मैं माउँट एवरेस्ट की चढ़ाई की पूछताछ करता था और काफी सारी खोजबीन करने के बाद मेरी भेंट 'पिंपरी-चिंचवड माउंटेनिअरिंग असोसिएशन' के सेक्रेटरी सुरेंद्र शेळके जी से हो गई । पहली ही मुलाकात में मैंने उनसे कहा कि, ''मैं माउँट एवरेस्ट की चढ़ाई करना चाहता हूँ ।''

मैंने अपने गुरु शेळके सर के मार्गदर्शन में माउंट एवरेस्ट शिखर की चढ़ाई के लिए माउंटेनिअरिंग कोर्स की तैयारी शुरू की । मुझे इसके लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी। बचपन से ही मेरी शारीरिक स्थिति कमजोर थी । इसलिए मुझे अपनी शारीरिक कसरत पर ध्यान देना जरूरी था । मुझे पता था कि मेहनत से ही मैं अपना लक्ष्य पूरा कर सकता हूँ । कोर्स का शुल्क कम होने पर भी मुझे अपनी माँ के गहने गिरवी रखने पड़े । परिवार का विरोध होने के बावजूद मैंने ''नेहरू इन्स्टिट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग'' उत्तरकाशी (उत्तराखंड) से माउंटेनियरिंग का कोर्स पूरा किया । वहाँ मुझे कई नई-नई बातें सीखने का अवसर मिला । एक बार तो कोर्स की तकलीफों से तंग आकर मैंने कोर्स अधूरा छोड़कर वापस लौट आने की बात भी सोची थी । तभी फोन पर मेरी माँ ने मुझसे कहा, 'मुझे अपने दूध पर पूरा भरोसा है । वह इतना कमजोर नहीं पड़ सकता ।' इस बात को सुनकर मुझे बहुत प्रेरणा मिली । तब से अपने जीवन में जब भी पीछे हटने का खयाल मेरे दिमाग में आता है तो मुझे अपनी माँ के वे शब्द याद आते हैं । इसी कोर्स के दौरान मेरी मित्रता एक अमेरिकन नागरिक स्टीव के साथ

श्रवणीय

विश्वास नांगरे पाटील जी के प्रेरणादायी भाषण सुनिए ।

पठनीय

'शेरपा तेनसिंग' की माऊंट एवरेस्ट पर चढ़ाई की कहानी पढ़िए ।

हो गई ।

इस कोर्स में मुझे 'बी' ग्रेड मिल गई । मैं बहुत निराश हो गया । इसी के दौरान मैंने विपश्यना ध्यान साधना का भी अध्ययन किया । दूसरी बार मुझे बेसिक माउंटेनियरिंग कोर्स के लिए जाना था लेकिन मेरे परिवार से ही विरोध हुआ, तब मुझे घर से भागकर कोर्स के लिए जाना पड़ा । ''हिमालयन माउंटेनियरिंग इन्स्टिट्यूट', दार्जिलिंग के कोर्स में मुझे'ए' ग्रेड मिल गई । इसी वर्ष उसी इन्स्टिट्यूट में एडव्हांस कोर्स को 'बी' ग्रेड मिल गई । बी.एस. सी. के बाद मैने सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय में एम.एससी. पदार्थ विज्ञान के लिए प्रवेश ले लिया । होस्टल में रहते हुए मैंने एक सपना देखा कि मैं एक बहुत ऊँचे शिखर पर चढ़कर तिरंगा फहरा रहा हूँ । इस सपने के कारण मैं फिर एक बार बेचैन हो गया । एम.एससी. की परीक्षा के बाद मैं फिर एडवान्स कोर्स के लिए मनाली चला गया । इस कोर्स के लिए भी मुझे झूठ बोलकर ही जाना पड़ा था । इस कोर्स के बाद तुरंत मैं एक बंगाली टीम के साथ टी-२ शिखर चढ़ाई के लिए निकल पड़ा । लेह-मनाली हाईवे के पाटसिओ से कुछ भीतर की ओर जो वर्जिन शिखर है, उसकी चढ़ाई मुश्किल थी । वर्जिन की चढ़ाई करने के लिए मेरे साथ सात बंगाली और दो शेरपा जुड़ गए । २०१० में लेह में बादल फट जाने, तथा ३-४ दिन लगातार बारिश होने के कारण मैं और मेरी टीम बेसकैंप से १६००० फीट की उँचाई पर ही अटक गई । बंगाली टीम के लीडर ने वापस लौटने का निर्णय लिया लेकिन मेरा इरादा शिखर चढ़ने का था । कुछ समय के लिए मौसम साफ हो गया और मैं तथा मेरी टीम चढ़ाई के लिए आगे बढ़ गई । टीम के अन्य लोगों ने बहुत थकान के कारण आगे की चढ़ाई बीच में ही छोड़ दी किंतु मैंने दो शेरपाओं की मदद से वर्जिन शिखर पर पहला कदम रखा । इस उपलब्धि के साथ ''टी-२'' शिखर पर चढ़ने वाला मैं पहला व्यक्ति बन गया । मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ कि सपने नींद में देखे हों या खुली आँखों से उनपर दृढ़ विश्वास रखने से ही सपने साकार होते हैं । अगर आपका अपने सपनों पर विश्वास है तो प्रकृति भी आपकी मदद करती है ।

इस सफलता के बाद मैंने सुरेंद्र शेळके जी की सहायता से एवरेस्ट २०११ की तैयारी का आरंभ किया । इस एवरेस्ट फतह के लिए मुझे २० से २५ लाख रुपयों की आवश्यकता थी, जिसको पूरा करना मेरे परिवार के लिए असंभव था।

मेरा अमेरिकन मित्र स्टीव मेरे सपनों के संघर्ष से अवगत था । उसने मुझे अमेरिका बुलाया । जीवन के बड़े-बड़े फैसले अंतःप्रेरणा से किए जाते हैं । इसी अंतःप्रेरणा से मैंने अमेरिका जाने का फैसला लिया । परिवार का विरोध होने के बावजूद मैं अपने फैसले पर अडिग रहा । आखिर जुलाई

'हिमालय पर्वत की बर्फ पिघल कर खत्म हो जाए तो' इसपर अपने विचार लिखिए ।

'एवरेस्ट' नाम क्यों पड़ा, जानकारी प्राप्त कीजिए ।

२०११ में मेरे अमेरिका जाने का दिन आ गया सुबह तीन बजे मेरे हवाई जहाज ने आकाश में उड़ान भरी । मैंने नीचे देखा । सारी मुंबई निद्रावस्था में थी और मैं जाग रहा था । मेरे सपनों को पंख मिल गए , 'अग्निपंख' । मुझे ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी का कथन याद आया –

'चिंता न करो, क्षोभ ना करो,
खेद न करो, कुछ करने का अवसर मिला है ।
अभी सर्वोत्तम होना शेष है,
अभी सर्वोत्तम किया ही नहीं ।'

अमेरिका में रहते मैंने १५ अगस्त २०११ को कैलिफोर्निया के माउंट शास्ता शिखर की चढ़ाई कर वहाँ मैंने अपने देश का राष्ट्रगीत बजाया । यहीं पर रहकर मैंने स्कूबा डाईविंग भी सीख ली । पैसिफिक महासागर के किनारे बाईक चलाते हुए बाईक एक्सपिडीशन भी कर ली । छह महीने अमेरिका में रहने के बाद मैंने सबसे भावभीनी विदा ली और एवरेस्ट मुहिम के लिए थोड़ी राशि समेटकर मैं भारत लौट आया ।

*भारत में आकर हालात फिर वही थे । एवरेस्ट के लिए जितने पैसे आवश्यक थे उतने मेरे पास नहीं थे । आखिर मेरे पिता जी ने अपना घर गिरवी रखा । माँ और बहनों ने अपने गहने बेच दिए और जीजा जी ने ऋण ले लिया । सब कुछ दाँव पर लगाकर मैं एवरेस्ट चढ़ाई के लिए निकल पड़ा ।

काठमांडू से एवरेस्ट जाते समय 'नामचे बाजार' से एवरेस्ट शिखर का प्रथम दर्शन हुए। मैंने पुणे की टीम 'सागरमाथा गिर्यारोहण संस्था' के साथ इस मुहीम पर था । बहुत जल्द हमने १९००० फीट पर स्थित माउंट आयलैड शिखर पर चढ़ाई की । इसके बाद हम एवरेस्ट बेसकैंप में पहुँचे । चढ़ाई के पहले पड़ाव पर सागरमाथा संस्था के अध्यक्ष रमेश गुळवे जी को पक्षाघात का दौरा पड़ा । उन्हें वैद्यकीय उपचार के लिए काठमांडू से पूना ले गए किंतु उनका देहांत हो गया। मैं और मेरे साथियों पर मानो दुख का एवरेस्ट ही टूट पड़ा । फिर भी हमने आगे बढ़ने का निर्णय लिया । *

बर्फ की चोटियाँ, हिमनद, आँधी-तूफान, हड्डियाँ जम जाए इतनी ठंड आदि का सामना करते हुए एवरेस्ट कैंप-१, कैंप-२ तक चढ़ाई करने में टीम सागरमाथा सफल हुई । १६ मई को एवरेस्ट कैंप-२ पर भारत का राष्ट्रगीत बजाकर मैंने विश्व रिकार्ड बनाया । उसके बाद मेरी सेहत बिलकुल बिगड़ गई । इसलिए मुझे नीचे डोंगबोचे नामक स्थान पर भेजा गया । वहाँ मैं बहुत हताश होकर बैठ गया था । वह अत्यंत बुरा क्षण था । जिन सपनों का पीछा मैं बचपन से कर रहा था उसमें मुझे असफलता मिलने वाली थी । आखिर मैंने ''विपश्यना'' से अपनी साँसों पर नियंत्रण

सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) आकृति पूर्ण कीजिए :
परिच्छेद में प्रयुक्त रिश्ते

(२) परिच्छेद में प्रयुक्त शहरों के नाम :
(अ) _____ (ब) _____

(३) (क) परिच्छेद में आए सर्वनामों की सूची तैयार कीजिए ।
(ख) परिच्छेद से समुच्चयबोधक अव्यय ढूँढकर लिखिए ।

(४) परिच्छेद से प्राप्त प्रेरणा लिखिए ।

पाया और सुबह होते ही मैं चत्मकारिक ढंग से एकदम ठीक हो गया । अपने सपनों पर होने वाली अपार निष्ठा ने ही मुझे ठीक किया था । मैं एवरेस्ट चढ़ाई के लिए निकल पड़ा । एवरेस्ट का डेथ झोन -५०, -६० (माइनस ५०, माइनस ६०) तापमान हड्डियाँ जम जाए इतनी ठंड, दो बार ऑक्सीजन खतम हो जाने के कारण मृत्यु को करीब से देखा । बहुत पहले मरे हुए गिर्यारोहकों के मृतदेह आदि का सामना करते हुए १९ मई २०१२ की सुबह ११.२० को मै संसार के सर्वोच्च शिखर पर बड़े गर्व के साथ पहुँच गया ।

नौंवी कक्षा में अनुत्तीर्ण फिर भी निराश ना होते हुए आज मैंने इतनी ऊँचाई हासिल की है । गिर्यारोहण के साथ मैं पढ़ाई में भी आगे बढ़ता रहा । आज मै पदार्थ विज्ञान जैसे जटिल विषय में अनुसंधान कर रहा हूँ । एवरेस्ट चढ़ाई के बाद मैंने 'वर्ल्ड पीस सेव्हन समिट' मुहीम शुरू की । अब तक चार महाद्वीपों के चार सर्वोच्च शिखर चढ़ चुका हूँ उनमें एशिया, यूरोप, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया आदि महाद्वीपों के ऊँचे शिखर शामिल हैं । ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप से सबसे ऊँचे दस शिखरों की चढ़ाई करने वाली पहली भारतीय टीम का नेतृत्व मैंने सफलता से किया है । अपने गिर्यारोहण के साथ सामाजिक काम करते हुए मुझे युनायटेड नेशन्स के साथ काम करने का अवसर भी प्राप्त हुआ है । मैंने अब तक छह किताबें लिखी हैं जो सबको प्रेरित कर रही हैं । मुझे यही बताना है कि अगर आप किसी लक्ष्य को दिलोजान से चाहते हैं तो उसे पूरा करने के लिए सारी दुनिया आपकी मदद करती है । आप कुछ कर नहीं सकते यह बताने का अधिकार किसी को मत दीजिए। आप में बहुत सारी ताकत है । अपने जीवन का कोई भी और कितना भी बड़ा लक्ष्य आप पूरा कर सकते हैं । जीवन में कठिनाइयाँ तो आती ही हैं । असफलता भी मिल सकती है पर हमें सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि असफलता, सफलता की पहली सीढ़ी है । दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर कोई भी कार्य असंभव नही है ।

—०—

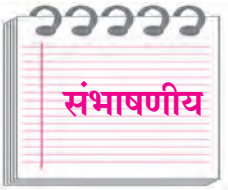

''गाँव और शहर दोनों जगह जीवन का संघर्ष है ।'' भाषण दीजिए ।

मनुष्य को अपने अच्छे और सच्चे सपनों को पूरा करने से कोई रोक नहीं सकता ।'' कथन की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

शब्द संसार

अवगत (वि.) = विदित, ज्ञात
भावभीनी (पुं.वि.) = भावमिश्रित

मुहावरे

नतमस्तक होना = नम्र होना ।
हासिल करना = प्राप्त करना
अडिग रहना = स्थिर रहना
दाँव पर लगाना = बाजी लगाना

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) आकृति पूर्ण कीजिए :–

आनंद जी ने इन शिखरों पर चढ़ाई की है ।

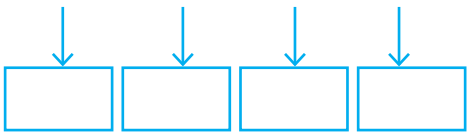

(ग) आनंद जी ने सपनों की यात्रा इन महाद्वीपों में की :–

१) ..... २) ..... ३) ..... ४) ..... ५) .....

(घ) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :–

आनंद जी पढ़ाई तथा पर्वतारोहण के दौरान इन संस्थाओं से जुड़ गए

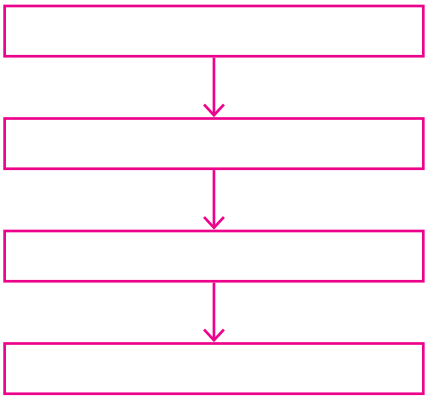

(२) आप अपने सहपाठियों के साथ किसी पर्वतारोहण के लिए गए थे । वहाँ के रोमांचक अनुभव को शब्दबद्ध कीजिए ।

पाठ से आगे

'अंतःप्रेरणा से ही जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है' – स्पष्ट कीजिए ।

रचना बोध

.....

.....

.....

भाषा बिंदु

(१) डायरी अंश पढ़िए और वाक्य के प्रकार ढूँढ़िए :–

१० मई २०१७ (बुधवार)

आज कक्षा में सूचना आई कि इन गर्मियों में हमारे स्कूल की ओर से एक दल शिमला भ्रमण को भेजने की योजना बनी है । मैंने भी अपना नाम उसके लिए दिया । मैं इस यात्रा के लिए उत्सुक हूँ ।

२० मई २०१७ (शनिवार)

तीस विद्यार्थियों का दल पी. टी. आई. श्री जयचंद वर्मा जी के साथ रवाना हुआ । रात्रि के साढ़े दस बजे हम दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँच गए । गाड़ी ग्यारह बजे चलनी थी । हमने अपने पूर्व निर्धारित स्थान ले लिए । भयंकर गर्मी पड़ रही थी । ग्यारह बजे गाड़ी चल पड़ी । हम अपने-अपने स्थान पर सो गए ।

२१ मई २०१७ (रविवार)

प्रातः साढ़े छह बजे गाड़ी कालका स्टेशन पर रुकी । यहाँ से हमें गाड़ी बदलनी थी । शिमला के लिए छह डिब्बों की खिलौने जैसी गाड़ी प्लेटफार्म पर लगी हुई थी । खिलौना गाड़ी के डिब्बे छोटे-छोटे थे और रेलवे लाईन 'नैरो गैज' थी । गाड़ी ठीक साढ़े सात बजे चल पड़ी । गाड़ी की गति पर्याप्त धीमी थी और वह पर्वत की पीठ पर मानो रेंगते हुए चढ़ रही थी । दूर तक घाटियों में फैली हरियाली दिखाई पड़ती थी । करीब साढ़े दस बजे गाड़ी लंबी सुरंग द्वारा बहुत सुंदर फूलों से सजे छोटे-से स्टेशन बड़ौग पर पहुँची जिसे देख राकेश बोला- 'ओह ! कितनी लंबी सुरंग ?'

२२ मई २०१७ (सोमवार)

दूसरे दिन हम हिमाचल पर्यटन विभाग की बसों में बैठकर कुफरी, वाइल्ड फ्लॉवर हॉल, क्रिग नैनी और नालदेश की यात्रा के लिए गए ।

२३ मई २०१७ (मंगलवार)

तीसरे दिन हम जाखू पर्वत पर पिकनिक के लिए गए । शिमला शहर के मध्य रिज से लगभग पंद्रह सौ फुट की ऊँचाई पर स्थित यह चोटी सैलानियों के आकर्षण का केंद्र है ।

२४ मई २०१७

चौथे दिन प्रातः (बुधवार) सात बजे हम वापस चल पड़े । सचमुच ही शिमला पहाड़ों की रानी है ।

(२) उपरोक्त डायरी अंश के आधार पर निर्देश-१ के अनुसार वाक्य लिखिए तथा निर्देश-२ के अनुसार परिवर्तित करके कॉपी में लिखिए :–

क्र.	निर्देश-१	वाक्य	निर्देश-२
१.	संयुक्त वाक्य	बसों में बैठकर कुफरी, क्रिगनैनी और नालदेरा की यात्रा के लिए गए ।	मिश्र वाक्य
२.	सरल वाक्य		संयुक्त वाक्य
३.	मिश्र वाक्य		सरल वाक्य
४.	विधानार्थक		निषेधार्थक
५.	प्रश्नार्थक		संकेतार्थक
६.	विस्मयार्थक		इच्छार्थक
७.	आज्ञार्थक		संदेहार्थक